मेरे जीवन की एक अविस्मरणीय घटना

लेखक : सैय्यद जुल्फिकार अली शाह साहब भूतपुर्व प्राचार्य चीफ़ कालेज लाहौर
अनुवादक : जनाब मुहम्मद हसन ''शाहिद नकवी''

पढ़े लिखे पाकिस्तानी भला इस बात को क्यों मानने लगे–वो हिन्दू औरतों की तरह अंध विश्वासी थोड़े ही होते हैं। मगर बात है सच्ची–और यह घटना 1922 ई0 की है।

परमानन्द यद्यपि आयु में मुझ से बड़े थे परन्तु मेरा आदर बहुत अधिक करते थे और चाहते भी थे बहुत। एक मित्र ने बताया कि उनके घर में एक मुस्लिम महात्मा की तस्वीर है जिसकी वह पूजा करते हैं। मनुष्य में खोज की प्रवृत्ति है–मैंने एक दिन परमानन्द से बातों ही बातों में पूछ लिया–''आपने कभी मुझे अपने घर निमंत्रित नहीं किया। उन्होंने उत्तर दिया–''निमंत्रित तो मैं जब करूं जब घर मेरा हो–घर आप का है–जब चाहें चलें''

मैने कहा अभी चलूं?''

वह बोले–नेकी और पूछ पूछ। यदि मेरा घर होता तो मैं कहता–च्यूंटी के घर नारायण विराजमान हो रहे रहे हैं–चलिए सरकार पधारिए।''

हम दोनो मच्छी बट्टे से होते हुए शाह आलमी दरवाजे की ओर बढ़े रास्ते में परमानन्द जी ने हलवाई की दुकान से कुछ मिठाइयां खरीदीं–घर पहुंचने पर उन्होंने मुझे बैठक में बिठा दिया–और स्वयं कुछ समय के लिए अन्दर चले गये। वापस आये तो चांदी के ट्रे में मिठाई, लेम्यूनेड की बोतलें और चांदी के गिलास रखे थे। मुझसे कुछ चखने को कहा–मैंने कहा–

''परमानन्द जी! मैं चखूंगा नहीं खाउंगा। और आप तो मेरी प्रकृति से परिचित ही हैं–मीठी वस्तुंए मेरी कमज़ोरी है'' इस पर वह बोले–

''चखने से मेरा अभिप्राय वही है जो आपका खाने से, श्री गणेश तो कीजिए श्रीमान।''

कूछ देर तक हम इधर उधर की बातें करते रहे फिर मैंने कहा–''मैंने सुना है–आप के किसी कमरे में एक मूस्लिम महात्मा का चित्र है–मैं उसे देखना चाहता हूं।'' उन्होंने कहा–''प्रसन्नता के साथ देखिए।''

जब हम उस कमरे में पहुंचे तो देखा कि सामने की दीवार के मध्य में एक व्योवृद्व ज्योतृमान महात्मा का चित्र लटका हुआ है और उस पर मोतियों के हार पड़े हैं–साथ में मोमबत्तियों के लिए खूबसूरत बर्तन भी रखे हुए हैं–चित्र के नीचे पीतल का एक शेल्फ है जिस पर गुलाब के फूल बिखरे हुए हैं।

मेरे पूछने पर परमानन्द जी ने बताया कि उनके परिवार का प्रत्येक सदस्य नित्य प्रातः इस चित्र का दर्शन करता है और दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन करता है–यह दर्शन इनके लिए बड़ा शुभ होता है–इसी प्रकार सोने के पूर्व सब लोग दर्शन और अभिवादन हेतु इस चित्र के सामने उपस्थित होते हैं।

मेरे पूछने पर इसका कारण वो बताने लगे–परन्तु शीघ्र ही रूक कर कहने लगे–

''आप माता जी के शब्दों में ही यह बात क्यों नही सुनते? और यह कहते ही उन्होंने अपनी माता जी को आवाज़ दे दी–माता जी, हमारे मित्र शाह जी आये हैं तथा सैय्यद बाबा की तस्वीर के विषय में पूछ रहे हैं–अगर आप इन्हें सारा हाल स्वंय सुनाएं तो ज्यादा अच्छा होगा।''

माता जी ने कहा–''ज़रा ठहरो मैं आती हूं!''

–और हम बैठक में वापस चले आये कुछ देर के पश्चात माता जी, परमानन्द जी, उनकी धर्मपत्नी और बहन सभी लोग बैठक में आ गये। मैं अभिवादन के लिए खड़ा हो गया और नमस्ते कहा। माता जी ने आशीर्वाद दिए–बहनों ने हाथ जोड़कर बड़ी शालीनता के साथ अभिवादन किया–हम सबके बैठने के बाद माता जी ने कहानी का प्रारम्भ इस प्रकार किया–

''परमानन्द लगभग चार वर्ष का था कि वह सख्त

बीमार पड़ा डा० निहाल चन्द्र की चिकित्सा थी–परन्तु कोई लाभ न हो रहा था–डाक्टर साहब की बातों से मैंने विचार किया–कि बच्चे को डा० बेली राम को दिखलाना चाहिए–डा० निहाल चन्द के बस का यह रोग नहीं जान पड़ता।''

जब हमने बच्चे को डा० बेली राम को दिखलाया तो वह कुछ मुंह फट आदमी थे–कहने लगे''जब हालत बिगड़ गयी तो मैं याद आया हूं? अब क्या हो सकता है?'' उन्होंने उपचार तो लिखकर दे दिया परन्तु हमारी बेचैनी निराशा की सीमाओं को स्पर्श करने लगी।

इतने में नाथ जी के एक सिख मित्र सरदार प्रताप सिंह जी आ गये–ये एक शिक्षित सन्त थे–गुरू ग्रन्थ साहेब के पवित्र मंत्रों का उच्चारण करते जाते और हमें परामर्श देते जाते। यह फारसी अरबी भी जानते थे जो इन्होंने अपने मुस्लिम गुरू से पढ़ी थी–यह हमारी बेचैनी से बड़े प्रभावित हुए और कहने लगे–

''तुम सैयद बाबा से दुआ कराओ''

मैंने कहा ''मैं नित प्रति मन्दिर जाती हूं और भगवान से प्रार्थना करती हूं।''

प्रताप सिंह जी ने कहा–''वह तो ठीक है–परन्तु तुम सैय्यद बाबा के पास जाओ।''

''जब आशाएं भी मनुष्य का साथ छोड़ देती हैं तो वो क्या नहीं कर गुज़रता?'' मैंने नाथ जी से कहा आप तो बच्चे के पास रहें और मैं प्रताप भाई के साथ जाती हूं भाई प्रताप सिहं ने कहा–''तुम अकेली ही जाओ पहले सैयद बाबा की धर्मपत्नी से मिलना और उनसे अपना हाल कहना–और देखो सच्चे गुलाब के पांच फूल सैय्यद बाबा के लिए भेंट ले जाना–केवल गुलाब के फूल और कुछ नहीं।''

''मैं घबरायी हुई घर से निकली–रास्ते में गुलफ़रोश की दुकान से सच्चे गुलाब के पांच फूल लिए इन्हें पवित्र भोज पत्र में रखा और भाई प्रताप सिंह के बताए हुए पते पर सैयद बाबा के घर पहुंची–वहां सबसे पहले उनकी धर्मपत्नी से मिली –वह सादे वस्त्र में सीता जी की अवतार मालूम हुईं–वो मेरे साथ हो लीं–हम सैय्यद बाबा के कमरे में गये। वह एक पलंग पर विराजमान थे। मैंने इनका ज्योतृमान चेहरा देखा–और बेसुध होकर मैं चाहती थी कि उनके चरणों में लोट जाऊं–परन्तु ईश्वर जाने मैं क्यों ऐसा न कर सकी। मैं ने पुष्प इनकी सेवा में भेंट कर दिए और बेसुध बुत बनी खड़ी रही। उन्होंने मेरी ओर नज़र उठाकर भी न देखा–और यद्यपि आयु में मैं उनसे छोटी थी–उन्होंने बात इस तरह शुरू की–

''माता जी, आदेश दीजिए–आप कैसे पधारीं?

बेसुध होकर मैं चीख़ पड़ी और मैंने रोते हुए कहा–

''मेरा बच्चा सख़्त बीमार है–उसे किसी तरह बचा लाजिए।''

उन्होंने जवाब दिया–

मैं कौन हूं किसी को बचाने वाला वह तो सिर्फ ईश्वर ही है–मैं भी उसी से प्रार्थना करता हूं।'' आप भी उसी से अपने बच्चे की जिन्दगी की भीख मांगें।''

कुछ देर तक वह नीचें नजरें किए शान्त रहे फिर मुझसे कहा। '' ये पांच फूल ले जाइए और साफ कटोरे में पानी लेकर थोड़ी देर के लिए यह फूल भी उसी में डाल दीजिए–फिर चम्मच से थोड़ा थोड़ा पानी बच्चे के मुंह में ड़ालिए एक दो चम्मच–जितना पानी बच्चा पी सके। फिर इन फूलों का हार बना लीजिए और मिट्टी की नई सुराही में पानी डालकर हार को सुराही की गरदन पर डाल दीजिए और बच्चे को पानी इसी सुराही से पिलाती रहें और ईश्वर से प्रार्थना करती रहें।''

''फिर उन्होंने प्रार्थना के लिए हाथ उठा दिए और किसी महापुरूष बीमार का नाम लेकर मेरे बच्चे के लिए प्रार्थना की।''

मुझे स्मरण नहीं कि मैंने सैयद बाबा और उनकी पूज्य धर्मपत्नी को भी नमस्कार किया या नहीं धन्यवाद तो क्या देती? किन्तु मैं आंधी की तरह दौड़ती हुयी घर पहुंची–बच्चा बेहोश पड़ा था–नाथ जी के चेहरे पर परेशानी और निराशा के चिन्ह थे। मैने तुरन्त चांदी का कटोरा निकाला, उसे धोया उसमें शुद्ध जल डाल कर फूल भी डाल दिए। बच्चे के मुंह में पानी का एक छोटा चम्मच डाला जो इसने गले के नीचे निगल लिया थोड़ी–थोड़ी देर पश्चात हम इसी तरह बच्चे को पानी पिलाते रहे। ईश्वर की दया से इस रात बच्चा चैन से सोता रहा। दूसरे दिन उसने आंखें खोल दीं–वह बहुत निर्बल हो गया था। मैं सैयद बाबा की धर्मपत्नी के पास पहुंची और उन्हें धन्यवाद दिया–फिर उनसे पूछा कि बच्चे को खाने के लिए क्या दूं? पहले तो वह सोच में पड़ गयीं फिर बोलीं–

"अगर बच्चा हज़म कर सके तो गुलाब वाली सुराही के पानी में दूध मिला कर दे–यदि इस तरह की बातें पूछनीं हों तो हकीम शेर शाह शीराज़ी जिनकी विधावली में बैठक है, से परामर्श कर लिया करें।"

"मैं ने ऐसा किया–धीरे धीरे ईश्वर ने बच्चे को पूर्ण स्वस्थ कर दिया–ईश्वर की दया से आज परमानन्द जी के एक सुपुत्र भी है–जिसका नाम है हरि दयाल अर्थात ईश्वर का दिया हुआ। फिर उन्होंने मेरे चेहरे पर वात्सल्य पूर्ण दृष्टि डाली और दुखित स्वर में कहा–"आप तो रो रहे हैं–आखिर ऐसा क्यों?"

मैं क्या उत्तर देता? भावविहवल होने से मेरी तो–हिचकी बंध गयी। माता जी ने बात जारी रखी।

"सैयद बाबा जी भी जब इस बीमार और महापुरूष का ज़िक्र करते थे तो उनके नेत्र अश्रुपात करने लगते उन्होंने हमारे लिए कितने दुःख सहे वे मर कर भी अमर हैं सैयद बाबा जी कहा करते थे कि मैं उनके (महापुरूष के) चरणों की धूल भी नहीं हूं ईश्वर जाने वह कितने बडे महाऋषि होंगे। उन्हीं के माध्यम से तो मेरे चांद परमानंद को नव जीवन प्राप्त हुआ ।

इस बार मैने उस हिन्दू महिला के चेहरे की ओर देखा–उसके नेत्रों से श्रद्धा और विश्वास के मोती टपक रहे थे।

लाहौर के रहने वालों ने 1946 तक एक हिन्दू परिवार को देखा होगा–जिसके सदस्य मोहर्रम के दसवें दिन सुनहरी मस्जिद के समीप, कभी कश्मीरी बाजार में, कभी डिब्बी बाजार में और कभी किसी और स्थान पर फूलों के हार लिए–हजरत इमाम हुसैन के वफ़ादार घोड़े की पुन्य स्मृति में निकाले जाने वाले जुलजनाह (दुल,दुल) की प्रतीक्षा करते रहते–और पुष्पहार अलम और ताजियों पर चढ़ाते–और किसी छोटे बच्चे के हाथ में कभी सोने और कभी चांदी की एक छोटी सी छतरी होती–जो वह हजरत इमाम हुसैन की सेवा में समर्पित करते–जिनके अद्वितीय बलिदान ने मानवता को नव जीवन प्रदान किया–इस श्रद्धालु समूह में परमानन्द भी होते, हरदयाल भी होते और उनके परिवार के अन्य सदस्य भी–

"इन्सान को बेदार तो हो लेने दो
हर क़ौम पुकारे गी हमारे हुसैन हैं"

(इमामिया मिशन, लखनऊ प्रकाशन क0 सं0 695 फ़रवरी 1976 ई0) / मोहर्रम 1369 हि0।

+++

(पेज नं0 8 का बक़िया.....................)

(पेज नं0 8 का बक़िया.....................)

जगह से हटे नहीं, पीठ के बराबर होने की वजह से उसके साथ आपने अपनी गर्दन को आगे की तरफ़ बढ़ाया और आँखो को बन्द कर लिया " फिर आपने तरतील से ठहर ठहर कर) तीन बार सुब्हा–न रब्बियल् आ'ला व बिहम्दिह कहा। फिर सीधे खड़े हो गये जब इत्मेनान से खड़े हो गये तो कहाः समि'अल्लाहु लिमन् हमिदह् फिर खड़े ही खड़े अपने दोनों हाथ मुंह के पास तक ऊंचे कर के अल्लाहु अक्बर् कहा और फिर सजदा किया और अपने दोनों हाथ घुटने से पहले ज़मीन पर रखे (यह बात हमारे और अहले सुन्नत के बीच अलग अलग है, वे पहले घुटनों को ज़मीन पर टेकते हैं फिर हाथ ज़मीन पर रखते हैं।) सजदे में आपने तीन मर्तबा *"सुब्हा–न रब्बियल् आ'ला व बिहम्दिह"* कहा। आपने सजदे की हालत में अपने जिस्म का कोई अंग दूसरे किसी हिस्से पर नहीं रखा। यह सजदे की वह सही हालत है जिसमें जिस्म के किसी हिस्से का भार दूसरे हिस्से पर नहीं पड़ता। " आपने जिस्म की हड्डियों को ज़मीन पर रख के सजदा किया, माथा और दोनों हाथ और दोनों घुटने और पैरों के दोनों अँगूठे और नाक पहले सातों हिस्से सजदे में वाजिब हैं और नाक का ज़मीन पर रखना सुन्नत है जिसका नाम इदग़ाम है। " फिर आपने सजदे से सर उठाया, जब अच्छी तरह बैठ गए तो कहा *अल्लाहु अक्बर*"। अल्लाहु अक्बर कहने के बाद इस तरह बैठे कि बाएँ ओर ज़ोर दिया और दाहिने पाँव को बाँए पाँव के तलवे पर रखा और *"अस्तग़्फ़िरूल्ला–ह रब्बी व अतूबु इलैह्"* ज़बान से कहा।" फिर बैठे होने की हालत (Position) में तकबीर (अल्लाहु अक्बर) कही और दूसरा सजदा किया और जो पहले सजदे में कहा था वही दूसरे सजदे में भी कहा (यानि *सुब्हा–न रब्बियल आ'ला व बिहम्दिह*)" आपने जिस्म के किसी हिस्से के लिए जिस्म के किसी दूसरे हिस्से का सहारा नहीं लिया, न रुकू में और न सजदे में और आपने हाथों को इस तरह रखा था जैसे उड़ने वाले जानवरों के पंजे होते हैं और अपने पूरे हाथों को कुहनियों तक सजदे में ज़मीन पर नहीं रखा (जैसे सजदए शुक्र में होता है) "इस तरह आपने दो रकअत नमाज़ अदा की फिर फ़रमाया" ऐ हम्माद इस तरह नमाज़ पढ़ा करो और नमाज़ में इधर उधर नहीं देखो और हाथों और उगँलियों को विला वजह हरकत न दो। ये थी वह नमाज़ की हालत जो हम्माद को बताई गई थी।

(जारी.....................................)